International Journal of Sanskrit Research 2023; 9(6): 171-176

International Journal of Sanskrit Research

अनन्ता

ISSN: 2394-7519
IJSR 2023; 9(6): 171-176
© 2023 IJSR
www.anantaajournal.com
Received: 01-11-2023
Accepted: 03-12-2023

मंगलदत्त शर्मा

शोधच्छात्र, वेद विभाग, महर्षि पाणिनी, संस्कृत एवं वैदिक विश्वविद्यालय, उज्जैन, मध्य प्रदेश, भारत

Corresponding Author:
मंगलदत्त शर्मा

शोधच्छात्र, वेद विभाग, महर्षि पाणिनी, संस्कृत एवं वैदिक विश्वविद्यालय, उज्जैन, मध्य प्रदेश, भारत

दर्शपौर्णमास इष्टि -याग का संक्षिप्त परिचय

मंगलदत्त शर्मा

सारांश

किसी भी कार्य को करने के लिए हमें शक्ति -ऊर्जा की आवश्यकता होती है, यह शक्ति अथवा ऊर्जा हमें अन्न से प्राप्त होता है ,अन्न वर्षा से , और वर्षा यज्ञ से प्राप्त होता है यह परम्परा प्राचीन काल से ही चली आ रही है। इसी कारण हमारे ऋषियों ने यज्ञ विज्ञान की विशिष्टता को अपने जीवन , समाज ,राष्ट्र के उन्नति के लिए आजीवन पर्यन्त यज्ञ का आचरण करते रहें हैं इससे हमारे इहलोक और परलोक दोनों ही मार्ग प्रशस्त होगा , इस कारण यह परम्परा हमें भी अपनाकर स्वयं तथा अपने समाज, राष्ट्र के उन्नति में सहायक बनना चाहिये।

कूटशब्द : अन्न, विज्ञान, यज्ञ का आचरण, इहलोक, परलोक

प्रस्तावना

प्रस्तुत शोधपत्र में दर्श-पौर्ण यज्ञविधि का संक्षिप्त परिचय के साथ यज्ञ का वैज्ञानिक प्रकार से विचार करते हुए दर्श और पौर्ण का शब्दार्थ ज्ञान, दर्श-पौर्ण में प्रथम याग कौन हो,यागकाल का निर्धारण,इष्टि-याग में भेद, प्रकृति इत्यादि यागों का विभाजन सहित चतुर्दशी कृत्य,पूर्णिमाकृत्य,एवं प्रतिपदाकृत्य प्रधानयाग के सभी ६ यागों को विधि पूर्वक इस लेख में वैज्ञानिक विश्लेषण किया जाएगा।

दर्श और पौर्ण का शब्दार्थ ज्ञान- दर्श यानी अमावस्या, पौर्ण अर्थात् पूर्णिमा दोनों मिलकर एक इष्टि "दर्शपौर्ण इष्टियाग" कहलाती हैं । दर्श-अमावस्या, पौर्ण अर्थात पूर्णिमा तिथि, इन दोनों कालों में प्रारम्भ होने के कारण से इसका "दर्शपौर्ण" नाम हुआ। यह याग हविर्याग की तृतीय संस्था कहलाती है।

प्रश्न- दर्श-पौर्ण में प्रथम याग कौन हो?

उत्तर-जिस प्रकार अग्निहोत्र का होमयाग सायं से प्रारम्भ करते हैं, उसी प्रकार यह दर्शपूर्ण याग पूर्णिमा से प्रारम्भ किया जाता है। यदि पूर्णिमा को अग्नि का आधान हुआ हो तो उसी दिन पूर्ण याग करें, किसी कारणवश यदि अमावस्या को श्रौताग्नि का आधान होता है तो उसे १५ दिन प्रतीक्षा करके पूर्णिमा से याग का प्रारम्भ करने का शास्त्र में निर्देश प्राप्त होता है।"दर्शपूर्णमासयज्ञ: पूर्णमासीमुपक्रम्यावस्यायां संस्थीयते।"(बौधायन श्रौतसूत्र-२०/१,२४/२०, (बौधायन श्रौतसूत्र-सायण कृतभाष्य,पृष्ट-३२)

प्रथम पूर्णिमा प्रारम्भ काल :- 1 वर्ष स्मार्ताधान एवं औपासन होम होने के पश्चात् स्मार्त अग्नि की सिद्धि (पुत्रादि कामना सिद्धि) होने पर एवं स्वयं आधानकर्ता के शिर के बाल कृष्ण-काले रहने के स्थिति में ही श्रौत नामक अग्नि का ग्रहण कर लेनी चाहिए "जात: पुत्र: कृष्णकेशोऽग्नीनादधीत" ।

प्रश्न- कितने दिनों तक यह यज्ञ सम्पादित हो?

उत्तर-जिस प्रकार अग्निहोत्र जीवन पर्यन्त अथवा कम से कम 30 वर्षों के लिए किया जाता है उसी प्रकार यह याग भी जीवन पर्यन्त अथवा कम से कम 30 वर्षों के लिए की जाती है। "त्रिंशत् वर्षाणि दर्शपूर्णमासाभ्यां यजेत्" (कात्यायन श्रौ.सू.४/२/४७)

यावज्जीवं यजेत।ताभ्यां यावज्जीवं यजेत,त्रिंशत् वा वर्षाणि,जीर्णो वा विरमेत (आपस्तम्ब श्रौतसूत्र-३/१४/१०)

उत्तर-यह यज्ञकर्म नित्य और काम्य दोनों है।

१.नित्य - प्रत्येक माह के पूर्णिमा एवं अमावस्या को कम से कम ३० वर्षों के लिए अथवा आजीवन पर्यन्त नित्य मानकर करनी चहिए।" त्रिंशत्वर्षाणि दर्शपूर्णमासाभ्यां यजेत" (कात्यायन श्रौतसूत्र-४/२/४७)

यावज्जीवं यजेत।ताभ्यां यावज्जीवं यजेत,त्रिंशत् वा वर्षाणि,जीर्णो वा विरमेत (आपस्तम्ब श्रौतसूत्र-३/१४/१०)

२.काम्य- स्वर्गादि कामना हेतु "दर्शपूर्णमासाभ्यां स्वर्गकामो यजेत" (आपस्तम्ब. श्रौ.सू. ३.१४.९)

"सर्वेभ्य: कामेभ्यो वै दर्शपूर्णमासौ" (वैखानस श्रौत ३.१४.१)

प्रश्न-इस यज्ञ को करने वाला अधिकारी कौन हैं ?

उत्तर-इस यज्ञ का अधिकारी वही हैं जो श्रौताधान करते हुए अग्निहोत्र किया हो ।

प्रश्न- दर्शपूर्ण इष्टि है या याग है?

उत्तर-यह कर्म **इष्टि** और **याग** दोनों हैं।

इष्टि - जब औषधी- यव, ब्रीहि, नीवार, प्रियंगु आदि पिष्टान्नों से पुरोडाश पकाकर की जावे तो "इष्टि" कहलाती है।

याग- जब पशु (छाग) या सोमलता से की जावे तब यह याग कहलाती है।

चतुर्विधात्मक प्रकृति याग-: 1. इष्टियों की प्रकृति दर्शपूर्णमास याग है 2. पशुद्रव्यओं की प्रकृति "अग्निसोमीय पशुयाग है" 3. सोम रस ग्रहण पूर्वक अनुष्ठेय कर्मों की प्रकृति "ज्योतिष्टोम" है।

प्रकृत्यादि चार प्रकार के यज्ञ - श्रौत में अनुष्ठेय समस्त यागों को प्रकृत्यादि चार प्रकार के यागों में विभाजित किया है ।

1. **प्रकृति याग** – दर्शपूर्ण, ज्योतिष्टोम ।
2. **विकृति याग**- सौर्यचित्रा, वैश्वान आदि ।
3. **प्रकृति विकृति दोनों** - अग्निषोमीय पशुयाग ।
4. **प्रकृति विकृति से भिन्न**- कुछ ऐसे भी याग हैं जो प्रकृति/विकृति दोनों नहीं होते हैं ,जैसे- गृहमेधीय इष्टि ।

प्रकृति याग की परिभाषा- जिसके प्रकरण में अपेक्षित समस्त अंगों का "अम्नान" ग्रहण हो वह प्रकृति है ।

विकृति याग की परिभाषा- जिस याग में अंगों का "अम्नान"ग्रहण न हो वह विकृति याग कहलाते हैं ।

दर्शपूर्णयाग सभी यागों की प्रकृति- दर्शपूर्ण नामक यह याग समस्त दृष्टियों का प्रकृति याग है, इसका ज्ञान जानने से ही समस्त श्रौतयागों का प्राकृतिक रूप से प्रारम्भिक परिचय प्राप्त हो जाता है, अत: प्रकृति है । इसी कारण हविर्यज्ञ में यह "अग्निहोत्र" के बाद सर्वप्रथम इसी याग

को करने का विधान प्राप्त होता है । इसमें समस्त अनुष्ठेय अंगों का पाठ किया जाता है ।

दर्शपूर्णमास प्रधान याग के भेद- इसमें कुल छ: याग सम्पादित होते हैं, इन सभी - छ: यागों का एक ही समवेत फल प्राप्त होता है-

१.**पौर्णमास याग** - इनके कुल तीन याग होते हैं –

(क) आग्नि के लिए अष्टकपाल पर पुरोडाश यज्ञ (ख) अग्निषोम के लिए उपांशुयाज आज्य(घृत) का (ग) अग्निषोमीय के लिए एकादश कपाल पर पुरोडाश यज्ञ ।

२.**दर्शयाग** - इनके भी 3 याग हैं ।

(क) अग्नि के लिए अष्टकपाल पर पुरोडाश याग (ख) इन्द्र(विष्णु) के लिए उपांशु आज्य अथवा दधियाग (ग) इन्द्राग्नी के लिए द्वादशकपाल पर पुरोडाशयाग अथवा पयोयाग।

प्रश्न - जब दोनों मिलकर एक ही यज्ञ है,एक ही फल देने वाला हो तो द्विवचन का प्रयोग क्यों ?

"दर्शपूर्णमासाभ्यां " में द्विवचन का प्रयोग है - जबकि फल एक ही ।तीन-तीन याग अलग अलग काल में होने के कारण पौर्णमासी एवं दर्श के तीन तीन यागों का समुदाय एक मिलकर कुल छ: यागों का समुदाय एक ही फल है । केवल दो समयों में अलग अलग होने के कारण द्विवचन प्रयोग है।

विद्वद शब्द घटित दो वाक्य इसके द्विवचन के सूचक हैं । " यं एवं विद्वान् पौर्णमासी यजते" "य एवं विद्वान् अमावस्यां यजते"

अनुष्ठान विधि-: यह दर्शपौर्णमास याग दो दिनों में किए जाने वाला यज्ञ है । पूर्णिमा से पारम्भ होकर प्रतिपदा को प्रधान याग सम्पन्न होता है । इसी प्रकार अमावस्या से प्रारम्भ होकर दूसरे दिन की प्रतिपदा को प्रधान याग होती है। इससे एक दिन पूर्व चतुर्दशी तिथि से ही व्रत का नियम उपवास प्रारम्भ हो जाता है । "अत उपवथ काल: सर्वदा चतुर्दश्यां वा भवति" (बौधायन श्रौतसूत्र-२४/२१) सायणभाष्य-पृष्ठ-३२)

पूर्णिमा कृत्य विधि-: पूर्णिमा तिथि से एक दिन पूर्व चतुर्दशी से उपवास करके रात्रि में भूमि शयन किया जाता है, पश्चात् पूर्णिमा की प्रात:काल में यजमान क्षौरादि कर्म करके स्नानादि से निवृत्त होकर नित्य सन्ध्यादि कर्म स्मार्तहोम, अग्निहोत्रहोम सम्पादन करके (आहवनीय, दक्षिणाग्नि) कुण्डों से अग्नि अथवा पुराने राखों को निकालकर पञ्चभू संस्कार करें। यजमान बाए हाथ में वज्र लेकर दहिने हाथ मे जल लेकर सर्वप्रथम आहवनीय पश्चात् दक्षिणाग्नि के पास बैठकर भूशुद्धि और पञ्चभू संस्कार करें।

1. कुशा से बने झाडू से सफाई करके कुण्ड के चारों दिशाओं में कुशा बिछावें ''दर्भै: परिसमूह्य ''
2. गोमय से लेप –गाय के गोबर से सभी कुण्डों का लेपन करें।''गोमयोदकेन उपलिप्य ''
3. 3.वज्र से रेखाकरण– तीन तीन रेखाएं (पश्चिम से पूर्व तीन, दक्षिण से उत्तर तीन) "वज्रेणोल्लेख्य"।
4. कुण्ड से मिट्टी का उद्धरण निकालना '' अनामिकाङ्गुष्ठाभ्यां मृदमुद्धृत्य '' ।
5. जल से प्रोक्षण- ''उदकेनाभ्युक्ष्य ''। यह विधि स्थण्डिल निर्माण के अन्तर्गत " कुण्डपञ्चभूसंस्कार" विधि कही जाती है।

विधि – (अग्निप्रणयन) गार्हपत्यागार से अग्नि लेकर आहवीय दक्षिणाग्नि में स्थापित करना ।

अन्वाधान- अग्नि में समिधाओं/काष्ठों का रखना ।मन्त्रोच्चारणपूर्वक अग्नि प्रज्ज्वलित करना ।

यजमान का क्षौर कर्म – पूर्णिमा एवं अमावस्या को नापित द्वारा यजमान शिखा,कक्ष,उपस्थ को छोडकर सम्पूर्ण वपन क्षौर कर्म करावे,यजमानपत्नी केवल नख कर्तन कर लेती है, यह एक विधि है।

दर्भ – इध्माहरण :- क्षौर कर्म करने के स्नानादि से निवृत्त होने के पश्चात् यज्ञीय दर्भ के उत्तर या पूर्व में बैठकर बिछाने हेतु दर्भों का संग्रह करना है । 24 दर्भों में प्रथम बार जो मुष्टि भर काटा गया वह "प्रस्तर मुष्टि"के नाम से जाना जाता है। तीन पाँच, सात, नौ इस प्रकार संख्याओं में बाँधकर आहरण करेगा । इसी प्रकार कुल 21 समिधाओं को काटकर

लाएगा । इनमें 15 सामधेनी के लिए , 3 आहवनीय परिधि के लिए, 2 आधार समिधा और 1 अनुयाज के लिए (15+3+2+1=21 समिधाएं) इन कुशा एवं समिधाओं को भूमि पर न रखें ।दोपहर -रात्रि में यजमान फलाहार करके रात्री में यजमान आहवनीय के पास एवं यजमानपत्नी गार्हपत्यागार के पास दर्भासन विछाकर भूमि पर ही शयन करें, सत्य का अचरण करे,झुठ बाते न बोले, ब्रह्मचर्य नियमों का पालन करें । इस प्रकार पूर्णिमा कृत्य अंग पूर्ण हो जाते हैं ।

कृष्ण प्रतिपदा कृत्य -: प्रात: कालीन स्नानादि संध्या, तर्पण, होम एवं प्रात: कालीन अग्निहोत्र सम्पन्न होने के बाद अध्वर्यु के द्वारा पौर्णमासेष्टि यज्ञ संपन्न होगा ।

मण्डप प्रवेश नियम-: मण्डप शाला में पूर्व दिशा से यजमान एवं दक्षिण दिशा से यजमान पत्नी का प्रवेश होगा । अन्य ऋत्विक् पूर्व दिशा से प्रवेश करेंगे ।

संकल्प-हाथ में ६ समित् लेकर आहवनीय के पश्चिम में बैठकर क्रियमान कर्म के निमित्त आज पौर्णमास सम्बन्धित आग्नेय अष्टकपालादि याग करूँगा। प्राप्त ६ समिधाओं से आहवनीय में २ एवम् गार्हपत्यागार,दक्षिणाग्नि में २,२ समिधा होम करें। अन्वाहार्य दक्षिणा ऋत्विकों को दे।

ऋत्विकवरण- इस यज्ञ में कुल छ: लोग उपस्थित रहेंगे, यजमान एवं यजमान पत्नी, अध्वर्यु , ब्रह्मा , होता, आग्नीध्र ।वरण में ब्रह्मा का स्थान आहवनीय के उत्तर में पूर्वाभिमुख होगा, एवं यजमान ब्रह्मा से दक्षिण में उत्तराभिमुख हो बैठकर ब्रह्मादि ऋत्विजों का वरण करता है।

प्रणीता प्रणयन- अध्वर्यु गार्हपत्य के पश्चिम में बैठकर आचमन प्राणायाम करके प्रणीता पात्र में जल भरकर आहवनीय कुण्ड के उत्तर में प्रणीता पात्र को रख देवें, अग्नि पुरुष के रूप में है और जल स्त्री के रूप में माना जाता है, स्त्री पुरुष की वामाङ्गी होती है, अत: अग्निकुण्ड के वाम भाग उत्तर दिशा में प्रणीता के जलपात्र को रखा जाता है।
अध्वर्यु द्वारा आहवनीय कुण्ड के पास कुशा परिस्तरण – सर्वप्रथम अध्वर्यु अपना हाथ पैर धोकर मण्डप में प्रवेश करेगा , आहवनीय कुण्ड के चारों दिशाओं में दर्भों का परिस्तरण करेगा ।दक्षिण दिशा में दर्भ रखकर ब्रह्मा स्थान को निर्धारित करेगा ।

आहवनीय एवं दक्षिणाग्नि आगारों मे अग्निस्थापना (उद्धरण विधि) -- यजमान गार्हपत्यागार से सर्वप्रथम पहले आहवनीय आगार में पश्चात् दक्षिणाग्नि आगार में अग्नि स्थापना करे।"उद्धरेति यजमान:" (कात्यायन श्रौत सू.४/१३/१

यज्ञीयपात्रों का स्थापन (पात्रासादन)-: अध्वर्यु यज्ञीयपात्रों को तीन भागों/वर्गों में रखेगा । प्रथम वर्ग में प्रति दो-दो पात्रों को रखेगा , इसका यह भाव है कि प्रकृति एवं पुरुष इन दो संख्याओं से ही सृष्टि रचना हुई है।

प्रथम वर्ग में -:स्रुव, जुहू, उपभृत, ध्रुवा, वेद, पात्री, आज्यस्थाली, प्राशित्रहरण, इडापात्र, प्रणीतापात्र ये सभी पात्र अध्वर्यु द्वारा आहवनीय के उत्तरभाग में बिछाए गए दर्भों पर अधोमुख रखा जाएगा ।

द्वितीय वर्ग-: स्फय, 21 कपाल, अग्निहोत्र हवनी, शूर्प, कृष्णाजिन, शम्या, उलूखल, मुसल, दृषद, उपलपात्र उत्तर भाग में ही कुशा बिछाकर रखना है।

तृतीयवर्ग-: कुशाओं के ऊपर योक्र,मदन्ती,मेक्षण,वेदाग्र,अन्वाहार्य,स्थाली,अश्म,उपवेश, पिष्टलेपपात्र एवं फलीकरण पात्र शूर्प आदि को रखना है ।

अध्वर्यु द्वारा ब्रह्मा का वरण- (अप प्रणयन कार्य) -: अध्वर्यु द्वारा ब्रह्मा का वरण होकर आहनीय के दक्षिण दिशा मे बिछाए गए कुशासन पर बैठेगा,अध्वर्यु से आदेश लेकर बह्मा चतुष्कोण वाले चमस में जल एवं कुशा रखेगा ।

हविर्निर्वाप (चयन) -: यव का पिष्टान्न (आटे) लेकर अथवा ब्रीहि (चावल) का आटे से पुरोडाश बनाया जाता है। किसी एक को निश्चित कर यावज्जीवन पर्यन्त करना होता है। यज्ञ मण्डप में शकट -गाड़ी से

धान्य(यव) निकालकर सुसंसृत करके जल मार्जन करना ''अपूर्व संस्कार'' कहलाता है।

अवहनन पेषण कर्म-: इसके अनन्तर अध्वर्यु कृष्णाजिन -मृगचर्म बिछाकर उलूखल रखकर आसादन करेगा , सुसंस्कृत करके मूसल से कूटकर चावल अथवा जव को साफ कर निकालेगा । ''हविष्कृदेहि'' मन्त्र बोलकर कूटेगा । पश्चात् पीष्टान्न (आटे) बनाने के लिए उपल - लोढा से उस चावल/जौ को पीसेगा ।

हवि:श्रपण- पाककर्म – गार्हपत्य या आहवनीय खर के पश्चिम भाग में आग्नेय पुरोडाश के लिए 8 कपालों और अग्निषोमीय पुरोडाश के लिए 11 कपालों पर अग्नि रखकर आटे से बने दोनों पिण्डों को (पहले गर्म पानी से सानकर दो पिण्ड आकृति में बनाकर) दोनों कपाल समूहों पर पिण्ड पुरोडाश रखकर पका लेवे । जिस पात्र में यह पिष्टान्न पिण्ड को बनाया गया है उस पात्र को जल से धोकर उस जल भाग को अग्नि के स्थापना से पूर्व में ''पंचभूसंस्कार'' वाले तीन रेखाओं के ऊपर जल छोड़ देवें, यह एकत:, द्वित:, त्रित: देवताओं का भाग माना जाता है ।

वेदि निर्माण -: आज्यावेक्षण -: (यजमान पत्नी द्वारा)

भूमि को खोदकर वेदि निर्माण होता है। एवं यजमान पत्नी द्वारा आज्यस्थाली में भरे हुए आज्यों में अपनी आँख खोलकर अपनी मुख को देखती है ।

आज्य ग्रहण -: आज्यस्थाली से स्रुव द्वारा आज्य को जुह्वादि पात्रों में भरण करना ही आज्य ग्रहण संस्कार कहलाता है। यह कार्य मंत्रोच्चारण पूर्वक किया जाता है। जुहू में ४बार,उपभृत में ८ और ध्रुवा में 4 बार ग्रहण होता है ।

वेदि परिस्तरण परिधि, परिधान- लाए हुए कुश मुष्टियों को प्रस्तर कहा जाता है। प्रथम कुश प्रस्तरमुष्टि भाग को हटाकर शेष कुशाओं को अध्वर्यु यजमान को देगा, यजमान ब्रह्मा को देगा, ब्रह्मा उसे धारण कर बैठा रहेगा । शेष कुशाओं को लेकर वेदि के पश्चिम भाग से तीन बार में कुशाओं का परिस्तरण होगा ।

सामधेनी कर्म -: इसमें 11 सामधेनी ऋचाओं का पाठ होता है प्रत्येक मंत्र पाठ के अन्त में ॐ का उच्चारण होगा । प्रत्येक मंत्रों पर एक एक समिधा अध्वर्यु आहवनीयाग्नि में प्रक्षेप करेगा ।

आधार-: आहवनीय के वायव्यकोण से आग्नेयकोण पर्यन्त ,नैऋति कोण से ईशान कोण पर्यन्त आज्य धारण करना आधार है। प्रजापति इसके देवता है। इनका मन में ही ध्यान करना है।

आर्षेय वरण-: इसके बाद अध्वर्यु जुहू,उपभृत को लेकर उत्तर भाग से दक्षिण में आकर, ब्रह्मा से अनुज्ञा लेकर प्रवर कहने के लिए अध्वर्यु ''आश्रावय'' आग्नीध्र को कहेगा , यह सुनकर आग्नीध्र ''अस्तु श्रौषट'' बोलेगा, इस प्रकार आग्नीध्र प्रत्याश्रावण करने के पश्चात् वत् शब्द जोडकर भृगुवत, वीतहव्यवत् , इत्यादि उच्चारण करेगा ।

प्रयाज -: इसमें पांच प्रयाजों का अनुष्ठान होता है। प्रत्येक भाग में अध्वर्यु ''आश्रावय'' आग्नीध्र को कहेगा, आग्नीध्र ''अस्तु श्रौषट्'' उत्तर देगा, बोलेगा इस प्रकार उत्तर पाने के बाद अध्वर्यु होता को प्रैष देगा ''समिधो यज'' होता नामक ऋत्विक समिध देवताक याज्या को पढकर अन्त में बषट्कार के समय वौषट् बोलकर अध्वर्यु जुहुगत आज्य को होम करेगा, यही क्रम पाँचों प्रयाजों में रहेगा ।

आज्य भाग -: प्रयाज के अनन्तर अग्नि एवं सोम देवता के लिए दो आज्य भागों से अनुष्ठान किया जाता है। पुरोनुवाक्या और आज्या मन्त्र पाठ के अनन्तर आहवनीय में द्रव्य का प्रक्षेप करना होता है । उसी प्रकार आज्य भाग का भी अनुष्ठान होता है। अग्नि देवता की आहुती आहवनीय कुण्ड के उत्तरार्ध-पूर्वार्ध में और सोम देवता की आहुती दक्षिणार्थ-पूर्वार्ध में होनी चाहिए ।

प्रधानयागानुष्ठान -: तीन प्रधान यागों में आग्नेय पुरोडाश प्रथम भाग है। आश्रावण- प्रत्याश्रावण होने पर अध्वर्यु होता को प्रैष सुनाएगा '' आग्नयेऽअनुब्रूहि'' होता पुरोनुवाक्या को पढेगा, तदनन्तर अध्वर्यु ''अग्निं यज '' आज्यामन्त्र के लिए होता को प्रैष करेगा तो होता ''ये यजामहे'' बोलकर याज्या मन्त्र पढ़कर अन्त में वौषट् का उच्चारण करेगा ।

उसी समय अध्वर्यु-पूर्ववत् दक्षिण भाग आकर हवि का होम करेगा । ठीक उसी समय यजमान भी '' अग्नय इदं नमम'' त्याग मन्त्र बोलकर अनुमन्त्रण मन्त्र का जप करेगा ।

यह क्रम सभी चरु-पुरूडाश यागों का है। इसके पश्चात् उपांशु याज होगा । विष्णु, प्रजापति अग्निषोम, देवताओं में विकल्पित एक देवता है, इस याग में याज्या पुरोनुवाक्या उपांशु करना चाहिए । पुन: उत्तराभिमुख होकर वषट्कार के समय होम करेगा । यह तृतीय अग्निषोमीय पुरोडाशयाग है।

इसके बाद – पार्वण होम (नारिष्ठ होम) स्विष्टकृतयाग, इडाभक्षण चतुर्धाकरण, ऋत्विक् दक्षिणा, अनूयाज सूक्तवाक पाठ, प्रस्तरण, प्रहरण, परिधि प्रहरण ,पत्नी संयजादि, इध्मप्रवश्चन पिष्टलेप फलीकरण होम कार्य होता है।

होता का कार्य -: कुशाओं को भूमि पर रखकर बिछाना, आहनीय में स्रुव से होम करके संस्था जप करना।

अध्वर्यु कार्य-: आहवनीय के पास जाकर कुशाओं को इकट्ठा अथवा कपालों को अग्नि से निकाल लेना आदि कार्य ।

यजमान कार्य -: समस्त नियमों का पालन करते हुए यज्ञविमोक मन्त्र जाप करेगा ।

दर्शयाग- इसी प्रकार दर्शेष्टि याग भी सम्पन्न होगा ।इसके भी तीन प्रमुख याग संपन्न होगे ।

1. आग्नेय पुरोडाश याग 2. ऐन्द्र दधियाग अथवा घृतयाग 3. ऐन्द्र पयोयाग अथवा द्वादशकपाल पुरोडाश याग।

चतुर्दशी कृत्य -: उपवास, भूमिशयन ।अमावस्या कृत्य-: क्षौरकर्म, स्नानादि, अग्निपञ्चभूसंस्कार पूर्वक अग्नि स्थापन, भूमिशयन नियम पालन। शुक्ल प्रतिपदा कृत्य-: तीनों याग पूर्ववत् किया जाता है ।

इति शम्।

सन्दर्भ

1. बौधायन श्रौतसूत्र (पाण्डुलिपि -सम्पूर्णानन्द.वि.वि.काशी) २. (बौधायन श्रौतसूत्र-सायण कृतभाष्य,सम्पादक-डा.रूपनारायण पाण्डेय) गङ्गानाथ झा के.सं.विद्यापीठ,प्रयाग।
2. कात्यायन श्रौतसूत्र (कर्काचार्यविरचित भाष्य,) जयकृष्णदास-हरिदास गुप्त,चौखम्भा सं.सीरिज प्रकाशन,वाराणसी)
3. आपस्तम्ब श्रौतसूत्र व्यख्याकार डा.जमुना पाठक,चौखम्भा सं.सीरिज प्रकाशन,वाराणसी)
4. वैखानस श्रौतसूत्र-पाण्डुलिपि,पुणे ग्रन्थालय,पुणे .महाराष्ट्र)।